17

कलीसिया जिसने कर लिया था, 1

(3:14-17)

फिलाडेल्फिया के तैंतालीस मील उत्तर पूर्व में लौदीकिया के विशाल खण्डहर हैं।[1] नगर की खुदाई नहीं हुई है और मेहराबों की बड़ी-बड़ी परतें और अन्य निर्माण पथरीली भूमि से बड़ी-बड़ी कब्र के पत्थरों की तरह एक घमण्डी नगर, जिसे लगता था कि उसने ''कर लिया'' की दुखद याद के रूप में गिरते हैं, एशिया माइनर के भ्रमण के दौरान जितनी भी जगहें मैंने देखी हैं, उन सब से अधिक मुझे लौदीकिया के बंजर लगने वाले अकेलेपन ने परेशान किया है।

यह पाठ ''आसिया की सात कलीसियाओं'' में से अन्तिम पर है (1:4क)। हमने इफिसुस से आरम्भ किया था और पिरगमुन के तट तक चले गए थे। थुआतीरा में से होते हुए हम दक्षिण में लौदीकिया तक चले गए। उस नगर से पश्चिम की ओर अस्सी मील जाने पर इफिसुस में वापस आकर अपनी चक्रीय यात्रा पूरी हो जानी थी।[2]

विशेषताएं

लौदीकिया की तीन विशेषताएं सीधे तौर पर वहां की कलीसिया के नाम पत्र से जुड़ी हैं:

(1) *कई लोग बहुत धनवान थे।* लौदीकिया उस समय संसार के सबसे धनी व्यापारिक नगरों में से एक था। इसकी भौगोलिक स्थिति पूर्व की ओर सबसे महत्वपूर्ण राजमार्ग इसे बड़े-बड़े बैंकों वाला आर्थिक केन्द्र बनाने में सहायता करती थी। इसे ''आसिया की वॉल स्ट्रीट[3]'' और ''करोड़पतियों का नगर'' कहा जाता था।

इसके लोगों को लगता था कि उन्होंने आर्थिक रूप से ''कर लिया था।'' यदि उनसे कोई पूछता, ''मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूं?'' तो उनका उत्तर होता, ''हमें कुछ नहीं चाहिए'' (देखें 3:17)। 60 ईस्वी में एक भूकम्प में लौदीकिया के नष्ट होने पर, यहां के लोगों ने रोम की सहायता लेने से इनकार कर दिया था और नगर को फिर से अपने खर्चे पर बनाया था।[4]

(2) *आमतौर पर वे स्वस्थ होते थे।* नगर से तेरह मील बाहर एक प्रसिद्ध चिकित्सा केन्द्र था। सुरमा बनाने वाला पाउडर यहां बनता था। यह पाउडर दुनियाभर के देशों को

भेजा जाता था।

अपने विश्व प्रसिद्ध चिकित्सकीय गरम पानी के चश्मों वाला हियरापुलिस (कुलुस्सियों 4:13) यहां से केवल छह मील दूर था। जब हमारा दल लौदीकिया के खण्डहरों में गया तो हमारे गाइड ने कुछ दूरी पर एक रिज दिखाया जिस पर सफेद रंग किया गया लगता था। उसने कहा, ''वह रहा हियरापुलिस, उस रिज के ऊपर।'' वहां पहुंचकर हमने देखा कि उसका रंग चोटी से गिरने वाली पानी की धातुओं से फीका पड़ गया था। रिज के ऊपर सैकड़ों तालाब थे, जो बाइबल के समयों की तरह आज भी सैलानियों के आकर्षण का केन्द्र हैं। यह क्षेत्र लम्बे समय से स्वास्थ्य का पर्यटन स्थल रहा है।[5]

(3) *उनमें से अधिकतर अच्छे कपड़े पहनते थे।* बढ़िया क्वालिटी की ऊन वाली काली भेड़ें[6] पास ही की पहाड़ियों पर चर रही थीं। इन भेड़ों की मुलायम चमकीली काली ऊन से कीमती वस्त्र बनाए जाते थे। संसार के बाज़ारों में ये वस्त्र ऊंचे दामों पर मिलते थे, परन्तु लौदीकिया के लोगों को सस्ते मिल जाते थे। इस प्रकार हमने लौदीकिया की कई विशेषताएं देखीं:

नगर
धनवान (बैंकिंग) चिकित्सा केन्द्र (आंखों के विशेषज्ञ) वस्त्र उद्योग (काली ऊन)

मण्डली (3:14क)

''और लौदीकिया की कलीसिया के दूत को यह लिख'' (आयत 14क)। लौदीकिया की मण्डली सम्भवतया पौलुस के इफिसुस में रहते समय स्थापित हुई थी (प्रेरितों 19:1, 8-10)।[7] यह प्रेरित हर हाल में इससे और इसके सदस्यों से परिचित था। कुलुस्से को लिखने के समय (जो लौदीकिया से दस मील दूर था), उसने कहा, ''मैं चाहता हूं कि तुम जान लो कि तुम्हारे और उन के जो लौदीकिया में हैं'' (कुलुस्सियों 2:1क)। उस पत्र के अन्त में, उसने फिर लौदीकिया के मसीही लोगों का उल्लेख किया और कहा कि उसने उन्हें एक पत्र भेजा है:

> लौदीकिया के भाइयों को और नुमफास और उन के घर की कलीसिया को नमस्कार कहना। और जब यह पत्र तुम्हारे यहां पढ़ लिया जाए, तो ऐसा करना कि लौदीकिया की कलीसिया में भी पढ़ा जाए,[8] और वह पत्र जो लौदीकिया से आए उसे तुम भी पढ़ना[9] (कुलुस्सियों 4:15, 16)।

प्रकाशितवाक्य लिखे जाने के समय, लौदीकिया की मण्डली को अस्तित्व में आए तीस से अधिक वर्ष हो चुके थे।

मसीह (3:14ख, ग)

कलीसियाओं के नाम लिखे पत्रों में पहली बार (केवल यहीं), अपने परिचय के लिए इस्तेमाल किए गए यीशु के वाक्यांश प्रकाशितवाक्य के पहले अध्याय में इस्तेमाल किए गए शब्दों की परछाईं नहीं है।[10] जैसे एक चिकित्सक अपने रोगी के उपचार के लिए विशेष उपचार करता है, वैसे ही यीशु ने मण्डलियों की आवश्यकताओं के अनुसार विशेष पत्रों का चयन किया। इस पत्र में यीशु द्वारा दी गई विशेषताएं लौदीकिया की कलीसिया की विशेषताओं से बिल्कुल भिन्न थीं।

पहले तो चंचल धन पर भरोसा रखने वाली मण्डली से यीशु ने अपना परिचय ऐसे व्यक्ति के रूप में कराया, जिस पर हमेशा भरोसा किया जा सकता है: ''जो आमीन, और विश्वासयोग्य, और सच्चा गवाह है'' (आयत 14ख)।

पूरे नाम के रूप में बाइबल में ''आमीन'' यहां पहली बार मिलता है।[11] कुछ लोगों को ''आमीन'' केवल प्रार्थना के बाद कहा जाने वाला सांकेतिक शब्द ही लगता है: परन्तु इस शब्द का विशेष अर्थ है। पहले यह एक इब्रानी शब्द था, फिर यूनानी और अब अंग्रेज़ी, बल्कि हर भाषा में इसका अर्थ *सच्चाई* की पुष्टि करना है।[12] जब सार्वजनिक प्रार्थना में हम ''आमीन'' शब्द जोड़ देते हैं (1 कुरिन्थियों 14:16), तो हम उस प्रार्थना पर स्वीकृति की अपनी मुहर लगा रहे होते हैं। जब हम बाइबल के किसी संदेश को ''आमीन'' कहते हैं (नहेम्याह 5:13), तो हम कह रहे होते हैं, ''बिल्कुल सही!'' ''आमीन'' का इस्तेमाल प्रार्थना के आरम्भ में या अन्त में हो सकता है (प्रकाशितवाक्य 7:12; 22:20, 21), यह शब्द किसी भी बात की सच्चाई की पुष्टि करने के लिए *किसी* भी समय इस्तेमाल किया जा सकता है। यीशु ने ज़ोर दिए जाने वाले अपने वाक्यों का आरम्भ ''सच-सच'' शब्द से किया[13] (देखें मत्ती 5:18; यूहन्ना 1:51); ''सच-सच'' शब्द *आमीन* शब्द का ही अनुवाद है।

जब ''आमीन'' शब्द को ''विश्वासयोग्य और सच्चा गवाह'' वाक्यांश से जोड़ा जाता है,[14] तो हमें यीशु के पूर्ण भरोसेयोग्य होने की शक्तिशाली बात मिलती है!

दूसरा, किसी मण्डली के लिए जो आत्मसंतुष्ट लगती हो, यीशु ने अपने आप को उनको भौतिक आशिषें देने वाले के रूप में अर्थात ''परमेश्वर की सृष्टि का मूल कारण'' (आयत 14ग) बाताया। ''परमेश्वर की सृष्टि का मूल'' का अर्थ यह नहीं है कि वह ''सृष्टि का भाग है,''[15] बल्कि इसका अर्थ यह है कि ''जिससे सब कुछ बना है।''[16] NASB में ''मूल'' शब्द पर यह मार्जिन नोट है: ''अर्थात मूल या स्रोत।''[17] यीशु द्वारा इस्तेमाल की गई शब्दावली कुलुस्सियों के नाम पौलुस के पत्र की शब्दावली से मेल खाती है:

> वह [अर्थात यीशु] तो अदृश्य परमेश्वर का प्रति रूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है। क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी

> वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं। और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं (कुलुस्सियों 1:15-17)।[18]

यदि ''सारी वस्तुएं उसी के द्वारा सृजी गईं'' तो लौदीकिया के लोगों को स्वयं को श्रेय देने के बजाय अपनी भौतिक समृद्धि के लिए प्रभु को धन्यवाद देना चाहिए था।

उनकी स्थिति (3:15)

शायद यीशु ने अपनी विश्वासयोग्यता और ईश्वरीयता पर इसलिए ज़ोर दिया क्योंकि लौदीकिया के लोगों की स्थिति का उसका अवलोकन उनके लिए स्वीकार करना कठिन होना था। लौदीकिया की कलीसिया ही एकमात्र ऐसी मण्डली थी, जिसकी कोई सराहना नहीं की गई। सरदीस की कलीसिया की सामूहिक रूप में कोई सराहना नहीं की गई, परन्तु फिर भी उन में ''कुछ ऐसे लोग [थे], जिन्होंने अपने-अपने वस्त्र अशुद्ध नहीं किए'' थे (3:4)। लौदीकिया में तो ''कुछ विश्वासी'' भी नहीं थे। इसलिए यीशु ने यह दावा करते हुए आरम्भ किया कि जैसे जितने दुखद उसके शब्द हो सकते थे, उतनी ही उसकी हर बात सच थी!

यीशु ने यह कहते हुए मण्डली का अवलोकन आरम्भ किया कि ''मैं तेरे कामों को जानता हूं'' (आयत 15क)। उसने यह इनकार नहीं किया कि लौदीकिया की कलीसिया के ''काम थे,'' अर्थात वे *कुछ* कर अवश्य रहे थे, परन्तु सम्भवतया वे जो कुछ भी कर रहे थे वह धन से जुड़ा हुआ था और जिससे वे कुछ पा सकते थे: ''हमने अकाल राहत के लिए अन्ताकिया में एक हज़ार शेकेल भेजे हैं! हमने इथोपिया में भोजन के बारह रथ भेजे हैं!'' जब परमेश्वर किसी को भौतिक रूप से अशीषित करता है तो उसके लिए उसे बिना व्यक्तिगत योगदान के धन देना सम्भव है। उसके लिए बिना किसी वास्तविक बलिदान के उसके विवेक को राहत देना सम्भव है![19]

फिर यीशु ने उनकी समस्या की ओर ध्यान दिलाया: ''मैं ... जानता हूं ... कि तू न तो ठण्डा है और न गर्म'' (आयत 15क, ख)। ''गर्म'' यूनानी शब्द *zestos* का अनुवाद है जिससे अंग्रेजी शब्द ज़ेस्ट (उत्साह) निकला है। इसका अर्थ ''खौलना'' है! यह ''ठण्डा'' *zestos* का विपरीत है इसलिए ''ठण्डा'' शब्द का अर्थ बर्फ जैसा ठण्डा होना होगा (देखें मत्ती 24:12)। लौदीकिया के मसीही आत्मिक तौर पर बर्फ की तरह ठण्डे नहीं थे (अर्थात वे अविश्वासी नहीं थे और न ही परमेश्वर के लोगों को सता रहे थे), वे आत्मिक रूप से इतने गर्म भी नहीं थे। (वे प्रभु के लिए आग पर नहीं तप रहे थे।) वे केवल ''नीम गर्म'' थे (3:16)।

हर मण्डली, जिसे मैं जानता हूं, में नीम गर्म सदस्य होते ही हैं, अर्थात वे सदस्य जो व्यक्तिगत प्रार्थना, बाइबल अध्ययन और अपनी जांच में लापरवाह होते हैं; वे सदस्य जो आराधना में निरन्तर नहीं आते; वे सदस्य जो चंदा बलिदानपूर्वक कभी नहीं देते; वे सदस्य जो स्थानीय कलीसिया के कार्यक्रम में बहुत कम रुचि दिखाते हैं; वे सदस्य जो किसी रोगी से मिलने, शोकित लोगों को शांति देने या खोए हुओं को सिखाने नहीं जाते; वे सदस्य

जिन्होंने ''अपने आप को कभी असुविधा में नहीं डाला, कोई निंदा नहीं सही या मसीह के लिए किसी प्रकार'' का सुख नहीं त्यागा है, ...''[20]

यीशु ने उन उदासीन सदस्यों से कहा, ''भला होता कि तू ठंडा या गर्म होता'' (आयत 15ग)। प्रचारकों ने इसे यह कहते हुए संक्षिप्त किया है, ''या तो अन्दर हो जा या बाहर चला जा!'' एक प्रचारक ने जोड़ा, ''द्वार पर मत खड़ा रह; आने-जाने वालों के लिए रुकावट होती है!''

पहले तो, यीशु की बात उलझाने वाली लग सकती है। यह समझाना आसान है कि वह उन्हें ''गर्म'' क्यों देखना चाहता था। अनुवादित शब्द ''गर्म''[21] का अर्थ आम तौर पर ''उत्साही'' निकाला जाता है। उदाहरण के लिए रोमियों 12:11 में उस शब्द का इस्तेमाल है, जो हम सब को चुनौती देता है कि ''आलसी न हों और आत्मिक उन्माद से भरे रहें।'' हमें निश्चय ही यह समझने में कोई कठिनाई नहीं है कि यीशु उन्हें उत्साही और जोशीले क्यों देखना चाहता था।

दूसरी ओर वह उन्हें ''नीम गर्म'' के बजाय ''ठण्डा'' क्यों देखना चाहता था?[22] हम तर्क देते हैं, ''अमसीही होने के बजाय, मसीही होना अच्छा नहीं है चाहे आंशिक रूप से मसीही क्यों न हों?''[23] हमारा तर्क सही है *यदि* वह सीमित समर्पण *परिवर्तन* की स्थिति में है, अर्थात वह आत्मिक रूप में बढ़ने की ओर कदम उठा रहा है। बिना किसी धार्मिक पृष्ठभूमि वाले व्यक्ति के मसीह में बालक के रूप में आराधना सभाओं में आना आरम्भ करने पर हम आनन्दित होते हैं। हम उसे कुछ चंदा न देने से कुछ देने की ओर बढ़ते हुए देखकर प्रसन्न होते हैं। उसकी उन्नति का *कोई* भी प्रमाण तब तक अच्छा है, जब तक उसे समझ है कि उसने एक मसीही के रूप में बढ़ना अभी आरम्भ ही किया है और उसे एक लम्बा सफ़र तय करना है।

लौदीकिया के मसीही लोगों में यह बात नहीं थी। उनका नीम गर्म होना एक स्थिर अवस्था में था अर्थात यह उनके जीवन का ढंग बन गया था। वास्तव में वे अपनी आत्मिक स्थिति पर घमण्ड करते थे (3:17)। जब सीमित भागीदारी परिवर्तन की अवस्था में *न* हो तो आत्मिक रूप से बर्फ जैसा ठण्डा होने से इसे प्राथमिकता नहीं दी जानी चाहिए। मैं कम से कम तीन सुझाव देता हूं कि यीशु ने क्यों चाहा होगा कि वे नीम गर्म होने के बजाय ठण्डे रहें:

(1) बर्फ की तरह ठण्डा होना अधिक ईमानदारी वाली बात है, क्योंकि ऐसा व्यक्ति मसीही होने का कोई दावा नहीं करता।

(2) आत्मसंतुष्ट, अर्थात परमेश्वर के नीम गर्म बालक को बदलने के बजाय बर्फ जैसे ठण्डे व्यक्ति के बदलने की आशा है, जो मसीही होने का ढोंग नहीं करता (देखें इब्रानियों 6:4-6; 2 पतरस 2:20)।

(3) नीम गर्म होना कलीसिया को ठण्डा होने से अधिक हानि पहुंचाता है। मैंने किसी को ईश्वर रहित मूर्तिपूजक की ओर उंगली करते यह कहते नहीं देखा, ''मैं मसीही *इसी लिए* नहीं हूं!'' परन्तु मैं उन लोगों को जानता हूं जो कलीसिया के अधूरे मन वाले सदस्यों की ओर उंगली करके कहते हैं, ''मैं मसीही क्यों बनूं? मैं उनसे तो अच्छा ही हूं!''

यह महत्वपूर्ण है कि सरदीस के नाम पत्र की तरह, लौदीकिया के नाम पत्र में इस तथ्य के बावजूद कि नगर में काफ़ी यहूदी थे, सताव की कोई बात नहीं है।[24] शैतान ने केवल लौदीकिया के मसीही लोगों को ही क्यों छोड़ा था? उसे वे वैसे ही अच्छे लगते थे, जैसे वे थे! जब तक वे अपने आत्मिक भ्रम में रहे, तब तक वे स्वतन्त्र लोगों के रूप में उसके काम में इतने सहायक थे, जितने रोम के कैदियों के रूप में नहीं होने थे!

परिणाम (3:16)

लौदीकिया के लोग तो अपनी आत्मिक स्थिति से संतुष्ट होंगे, परन्तु प्रभु नहीं था। उसने उन्हें बताया, ''सो इसलिए कि तू गुनगुना है, और न ठण्डा है और न गर्म, मैं तुझे अपने मुंह में से उगलने पर हूं''[25] (आयत 16)। अनुवादित शब्द ''उगलने'' के लिए यूनानी शब्द *emeo* है, जिससे उल्टी दिलाने वाली ''emetic'' चीज़ के लिए शब्द निकला है। साधारण भाषा में, यीशु ने कहा, ''तुम्हें देखकर मुझे उल्टी आती है।''[26] उनकी आत्मिक आत्मसंतुष्टि का मसीह पर वही प्रभाव था, जो पेट पर गुनगुने पानी का होता है। सदियों से गुनगुने पानी का इस्तेमाल वमनकारी (औषधि) अर्थात किसी हानिकारक वस्तु को शरीर से निकालने के लिए किया जाता है। लौदीकिया के इलाके में गर्म पानी के चश्मे बहुत पाए जाते थे, जिससे हो सकता है कि कई यात्रियों ने उन चश्मों के पानी को निगल लिया होगा और उन्हें उल्टी आ गई होगी।

इसलिए जब यीशु ने कहा, ''मैं तुझे अपने मुंह में से उगलने पर हूं'' तो उसके कहने का अर्थ था कि ''तुम्हें देखकर मुझे उल्टी आने लगी है!'' वह यह भी कह रहा था, ''जब तक तुम अपनी उदासीनता से मन नहीं फिराओगे, तब तक तुम्हारा मेरे साथ निकट का सम्बन्ध नहीं हो सकता।''[27] उनका अनन्त भविष्य दाव पर लगा हुआ था!

अन्तर (3:17)

जब पढ़ने वाला पत्र पढ़ते-पढ़ते यहां तक पहुंचा, तो लौदीकिया के लोगों को लगा होगा कि उनकी डाक गलती से किसी दूसरी मण्डली को चली गई होगी। मैं उनके यह कहने की कल्पना कर सकता हूं, ''पता एक बार फिर से देख लो। तुम्हें पक्का पता है न कि इस पर किसी और का नाम नहीं लिखा हुआ था?'' एक बात तो पक्की है कि उन्होंने अपने आप को वैसे नहीं देखा, जैसे प्रभु ने उन्हें देखा था। यीशु ने उन्हें बताया, ''*तू* जो कहता है, कि मैं धनी हूं, और धनवान हो गया हूं, और मुझे किसी वस्तु की घटी नहीं'' (आयत 17क)।[28] अपने अन्दर जोश की कमी होने पर लज्जित होने के बजाय उन्हें इस पर गर्व था। कुछ लोग आत्मिक अलगाव को एक विशेषता मानते हैं,[29] और दूसरे मसीही लोगों के सक्रिय होने पर परेशान हो जाते हैं।

मूल शास्त्र में दोहराव मिलता है, जिसकी झलक कई अनुवादों में नहीं है। मूल शास्त्र में ऐसा लिखा है, ''मैं धनवान हूं और मैं धनवान बन चुका हूं और मुझ में कोई कमी नहीं है।'' दोहराव बल देने के लिए था। वे कह रहे थे, ''हम धनवान हैं, *धनवान हैं,* धनवान

हैं!'' उनके मन में सांसारिक और आत्मिक दोनों प्रकार का धन हो सकता है; कई लोग सांसारिक धन को स्वर्गीय स्वीकृति के प्रमाण के रूप में देखते हैं (देखें मत्ती 19:24, 25)। यीशु हमें बताना चाहता है कि हो सकता है कि किसी मण्डली के पास आकर्षक इमारत हो, प्रसिद्ध प्रचारक हो, प्रभावशाली कार्यक्रम हो, परन्तु फिर भी वह कील की तरह कठोर और बेजान हो![30]

लौदीकिया के लोगों को लगता था कि वे धनवान हैं, परन्तु वे धोखे में थे। यीशु ने कहा, ''और [तू] यह नहीं जानता, कि तू अभागा और तुच्छ और कंगाल और अन्धा, और नंगा है'' (आयत 17ख)। एक बार फिर हमें याद दिलाया जाता है कि ''यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है'' (1 शमूएल 16:7)।

यीशु ने उनकी आत्मिक स्थिति की समीक्षा के लिए पहले तो सामान्य शब्दों का इस्तेमाल किया। एक शब्द जिसका इस्तेमाल किया गया वह ''अभागा'' था।[31] ''अभागा'' के यूनानी शब्द का संकेत ''पत्थर की खान में काम करने वाले या खानों में काम करने वालों की तरह कठोर परिश्रम से थके और चूर होने'' की ओर था।[32] प्रभु ने उन्हें करोड़पतियों के रूप में नहीं, बल्कि नि:सहाय दासों के रूप में देखा! यीशु ने ''तुच्छ'' शब्द का इस्तेमाल भी किया। इसके लिए यूनानी शब्द का इस्तेमाल तरस योग्य व्यक्ति के लिए किया जाता था। प्रभु की दृष्टि में, प्रशंसा योग्य होने के बजाय वे तरस योग्य थे। उन्हें यीशु का उपचार कितना बुरा लगा होगा! घमण्डी व्यक्ति को सबसे अधिक घृणा उस पर तरस खाने पर आती है।

फिर यीशु ने स्पष्ट शब्दों में उनकी आत्मिक स्थिति का वर्णन किया:

नगर (और कलीसिया)	स्थिति (आयत 17)
धनवान (बैंकिंग)	निर्धन
स्वास्थ्य केन्द्र (आंखों में विशेषज्ञता)	अन्धा
वस्त्र उद्योग (काली ऊन)	नंगा

उन्हें लगता था कि वे ''धनवान'' हैं, जबकि वास्तव में वे ''निर्धन'' थे। अनुवादित शब्द ''निर्धन'' का अर्थ ''कमी होना'' नहीं, बल्कि इसका अर्थ ''*कुछ नहीं* होना'' है। वे रहते तो आसिया माइनर के सबसे धनवान नगर में थे, परन्तु आत्मिक रूप में वे दरिद्र थे। स्मुरने की मण्डली ''निर्धन होने के बावजूद धनवान'' थी, जबकि लौदीकिया की मण्डली ''धनवान होने के बावजूद निर्धन'' थी।

उनके यहां आंखों का विश्वस्तरीय उपचार उपलब्ध था, परन्तु वे ''अन्धे'' थे।[33] उन्हें

अपनी आत्मिक स्थिति दिखाई नहीं देती थी और मसीहियत का सच्चा स्वभाव भी नहीं। उन्हें यह देखने की आवश्यकता थी कि मसीहियत के लिए जोश होना आवश्यक था!

हैंस क्रिश्चियन एंडरसन की कहानी वाले राज की तरह,[34] लौदीकिया के लोगों को लगता था कि उन्होंने उत्तम वस्त्र पहने हुए हैं, जबकि वास्तव में वे ''नंगे'' थे। सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र में नंगेपन को लज्जा का पर्याय बताया गया है।[35] पूर्वी देशों में, किसी के कपड़े उतारने का अर्थ उसे अपमानित करना होता है,[36] परन्तु उसके सिर पर कपड़ा रखना उसे सम्मान देना है।[37] भौतिक रूप में लौदीकिया के लोगों के पास धन, काला चोगा था; परन्तु आत्मिक अर्थ में उनके पास धार्मिकता का सफ़ेद लिबास नहीं था, जो केवल प्रभु ही दे सकता है (देखें 3:18)।

सारांश

इस पाठ में हम ने लौदीकिया की समस्या की ओर ध्यान दिलाने का प्रयास किया है। अगले पाठ में हम यीशु का समाधान देखेंगे।

इस प्रस्तुति को समाप्त करते हुए, दो बातों पर बल दिया जाना चाहिए: (1) लौदीकिया की समस्या केवल मण्डली की नहीं, बल्कि व्यक्तिगत थी। लौदीकिया की कलीसिया नीम गर्म थी, क्योंकि इसके सदस्य नीम गर्म थे। मण्डली के नीम गर्म होने को निकालने के लिए हर सदस्य के लिए अपना योगदान देना और काम करना आवश्यक है।

(2) लौदीकिया की समस्या क्षेत्रीय नहीं, बल्कि विश्वव्यापी थी। प्रभु ने इस पत्र को इसलिए सम्भालकर रखा है, क्योंकि उसे मालूम था कि लौदीकिया की समस्या केवल उसी की नहीं होगी, अर्थात गुनगुना होना सदियों तक कलीसिया को परेशान करता रहेगा। धार्मिक रूप में आत्मसंतुष्ट होना कितना आसान है!

मेरी प्रार्थना है कि इन पंक्तियों को पढ़ने वाला हर व्यक्ति इसे अपने लिए समझे। क्या आप प्रभु की सेवा करते हुए नीम गर्म हुए हैं? क्या आपने अपना पहले वाला जोश खो दिया है? क्या आप आत्मिक लीक पर चलते हुए संतुष्ट हैं? यदि हां तो आज ही प्रभु के लिए अपने समर्पण को रीचार्ज करें! वह चाहता है कि उसकी सेवा के लिए आपके मन में आग हो![38]

टिप्पणियां

[1]हमारे यात्री दल की अगुआई करने वाला तुर्की का गाइड ''लौदीकिया'' को ''लाह-ओह-दे-कि-युह'' बोलता था। [2]''आसिया की सात कलीसियाएं और पतमुस टापू'' वाला मानचित्र देखें। [3]न्यू यॉर्क नगर की वॉल स्ट्रीट को आमतौर पर अमेरिका का आर्थिक केंद्र माना जाता है। [4]उनकी ओर से यह भला काम था, परन्तु आर्थिक रूप में सराहनीय बात आवश्यक नहीं कि धर्म में उपयुक्त हो। लौदीकिया के मसीही लोगों के लिए यह अहसास करना आवश्यक था कि जहां तक *उद्धार* की बात थी, वे अपने दम पर कुछ *नहीं* कर सकते थे। [5]खनिज वाले गर्म चश्मों की भरमार वाला लगभग हर क्षेत्र स्वास्थ्य के पर्यटन स्थल के रूप में

प्रसिद्ध हो जाता है और वहां पर्यटक आने लगते हैं।[6]अमेरिका में ''काली भेड़'' शब्द नकारात्मक संकेत माना जाता है (जैसे ''वह अपने परिवार की काली भेड़ है''), परन्तु लौदीकिया में नहीं। लौदीकिया में काली भेड़ होने का अर्थ धन था![7]इपफ्रास नामक पौलुस के सहकर्मी, जिसने कुलुस्से की मंडली स्थापित की (कुलुस्सियों 1:7; 4:12) ने लौदीकिया के निकट भी एक कलीसिया बनाई होगी।[8]इस पद से और गहराई से समझ आता है कि नये नियम की पुस्तकों को कलीसियाओं में कैसे वितरित किया गया है।[9]लौदीकिया के नाम पौलुस के पत्र के सम्बन्ध में दो सम्भावनाएं इस प्रकार हैं : (1) इसे हमारे लिए संभाल कर रखा गया है, जिसे हम ''इफिसियों के नाम पत्र'' कहते हैं। कुछ प्राचीन हस्तलिपियों में इफिसियों 1:1 ''इफिसुस में'' नहीं मिलता और पौलुस ने इफिसियों के नाम पत्र को निजी सदस्यों को अभिवादन के साथ समाप्त नहीं किया, जिससे कई लोग यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यह पौलुस का लिखा एक सामान्य पत्र था और पहले कलीसिया का स्थान जोड़कर इसकी व्यक्तिगत प्रतियां बना दी गई थीं। (2) लौदीकिया के नाम पत्र को हमारे लिए संभालकर नहीं रखा गया क्योंकि इसमें नये नियम की पुस्तकों में पाई जाने वाली सामग्री ही थी, जिसकी हमें आवश्यकता नहीं थी। यद्यपि जिस प्रकार हमारे पास यीशु की कही हर बात नहीं मिलती (यूहन्ना 20:30, 31), वैसे ही हमारे पास परमेश्वर की प्रेरणा से लिखने वालों की हर बात नहीं है, परन्तु हमारे पास वह सब-कुछ है, जो परमेश्वर चाहता था कि हमारे पास हो यानी हर भले काम के लिए तत्पर करने के लिए हर आवश्यक बात (2 तीमुथियुस 3:17)।[10]3:14 का *एक* वाक्यांश ''विश्वास योग्य और सच्चा गवाह'' 1:5 से (''विश्वास योग्य साक्षी'') मिलता है।

[11]पुराने नियम में ''आमीन'' परमेश्वर के लिए *शीर्षक* के रूप में इस्तेमाल हुआ है (यशायाह 65:16 में, ''सच्चा'' ''आमीन'' का एक अनुवाद है), परन्तु इसका इस्तेमाल नाम के लिए नहीं होता।[12]यूनानी शब्द *आमीन* ''होना'' क्रिया के संज्ञा रूप का भाग है। इस कारण कई बार कहा जाता है कि ''आमीन'' का अर्थ है ''ऐसा ही हो!''[13]KJV में ''verily'' है।[14]1:5 में यीशु को ''विश्वास योग्य साक्षी'' कहा गया था। वहां बल यीशु के मरने तक विश्वासी होने (यानी शहीद होकर) पर था। यहां पर बल उसके भरोसे योग्य होने पर है।[15]यहोवा विटनेस वालों द्वारा इस आयत का इस्तेमाल यह साबित करने के लिए किया जाता है कि यीशु को सृजा गया था। टिप्पणी 18 देखें।[16]कुछ लोगों का विचार है कि यीशु ने स्वयं को *आत्मिक* सृष्टि अर्थात कलीसिया के कर्ता के रूप में दिखाया है। संदर्भ *भौतिक* सृष्टि के पक्ष में है, परन्तु इसका अर्थ आत्मिक सृष्टि भी हो सकता है।[17]यूनानी शब्द *arch* का अनुवाद ''मूल'' हुआ है, जिसका अनुवाद ''हाकिम'' या ''प्रधान'' के रूप में भी हो सकता है। इसी लिए NIV में ''परमेश्वर की सृष्टि का हाकिम'' अनुवाद हुआ है।[18]यदि ''*सारी* वस्तुएं उसी के द्वारा सृजी गईं'' और ''वही *सब* वस्तुओं में प्रथम है'' तो यीशु किसी प्रकार भी सृष्टि नहीं हो सकता। देखें यूहन्ना 1:1-3; इब्रानियों 1:8,10. [19]मैं इस पद को मिलाता हूं, क्योंकि लौदीकिया की कलीसिया का व्यवहार पश्चिमी जगत के कई मसीही लोगों के बारे में बताता है। यदि यह पद वहां पर जहां आप रहते हों उपयुक्त न हो तो केवल इतना बताएं कि लौदीकिया के लोगों के ''काम समर्पित लोगों के जोश भरे काम नहीं, बल्कि मन को कम से कम राहत देने वाले'' थे।[20]जेम्स एम.टॉलि, *द सेवन चर्चिस ऑफ एशिया* (पैसाडिना, टैक्सस: हाउन पब्लिशिंग कं.,1968), 73 में उद्धृत,बॉयड कारपेंटर।

[21]अनुवादित शब्द ''गर्म'' यूनानी शब्द *zestos* के मूल शब्द *zeo* का अनुवाद है।[22]इस बात से परेशान कि यीशु ने लौदीकिया के लोगों को गुनगुना होने के बजाय ठण्डा होने के लिए क्यों कहा, कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि ''ठण्डा'' और ''गर्म'' दोनों का इस्तेमाल अच्छे अर्थ में होता है, जबकि केवल ''नीम गर्म'' का इस्तेमाल ही बुरे अर्थ में होता है। उदाहरण के लिए हम में से अधिकतर लोग ठण्डा और गर्म तो पीते हैं, परन्तु गुनगुना नहीं पी सकते। इस विचार को मानने वाले लोग यह ध्यान दिलाते हैं कि प्रकाशितवाक्य 3:15, 16 में अनुवादित शब्द ''गुनगुना'' का इस्तेमाल मत्ती 10:42 में ''एक कटोरा ठण्डा पानी'' के लिए हुआ है, परन्तु अधिकतर लेखकों का यह मानना है कि प्रकाशितवाक्य 3:15, 16 में ''ठण्डा'' का इस्तेमाल अनचाही आत्मिक स्थिति के लिए है।[23]आत्मिक ''ठण्डेपन'' के लिए एक और सम्भावना विश्वास से फिरना है।[24]लौदीकिया की स्थापना होने के समय यहूदियों को नगर की आर्थिकता बनाने के लिए बाहर से लाया गया था। सदियों तक, व्यापार और लाभ के अवसरों से आकर्षित होकर अन्य यहूदी लौदीकिया में आते

थे। [25]मूल में वचन कहता है, ''मैं... पर हूं।'' [26]यूजीन एच.पीटरसन, *द मैसेज: न्यू टैस्टामेंट विद साम्स एंड प्रोवर्ब्स* (कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडो: नवप्रैस पब्लिशिंग ग्रुप, 1995), 614-15. [27]आयत 20 पर ध्यान दें: उन्होंने यीशु को अपने जीवनों से निकाल दिया था। [28]इस आयत की तुलना लूका 12:19 से करें। [29]जहां हम रहते हैं, वहां कहा जा सकता है, ''धर्म के विषय में 'ठण्डा' होना उन्हें विशेष बात लगती होगी।'' [30]''कील की तरह कठोर'' अपनी व्याख्या स्वयं करता अलंकार है। आप चाहें तो इसकी जगह आपके यहां इस्तेमाल होने वाली कोई और बात कह सकते हैं।

[31]मूल शास्त्र में इसका संकेत *सबसे* अभागे के लिए है। [32]टॉली, 75. [33]2 पतरस 1:9 देखें। [34]हैंस क्रिश्चियन एंडरसन ने ''द एम्परर'स न्यू क्लोथ्स'' नामक एक कहानी लिखी, जिसमें एक राजा को यह गलतफ़हमी थी कि उसने जादुई धातु से बना शानदार सूट पहना है, जब तक एक बच्चे ने उसे यह नहीं बताया कि वह नंगा है। [35]यह परमेश्वर द्वारा प्रमाणित पति और पत्नी के एक-दूसरे के सामने नंगे होने के लिए नहीं, बल्कि सार्वजनिक रूप में नंगे होने की बात है (उत्पत्ति 2:25; 1 कुरिन्थियों 7:4)। [36]2 शमूएल 10:4; यशायाह 20:4; यहेजकेल 16:37-39; नहूम 3:5. [37]देखें उत्पत्ति 41:42; एस्तेर 6:6-11; दानिय्येल 5:29. [38]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाता है, तो पहली प्रासंगकिता मसीही लोगों के लिए होगी, परन्तु लोगों को मसीही बनने का निमंत्रण भी इसमें होना चाहिए (गलातियों 3:26, 27)। दिए जाने वाले निमंत्रण में इस बात पर जोर दिया जाना चाहिए कि वे केवल ''आज्ञाओं का पालन'' ही नहीं कर रहे हैं, बल्कि वे अपने जीवनों को प्रभु को *दे रहे* हैं।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. इस पाठ में दिए गए मानचित्र का इस्तेमाल करते हुए, क्या आप आसिया की सात कलीसियाओं की स्थिति अध्याय 1 से 3 में बताए अनुसार क्रम में बता सकते हैं?
2. लौदीकिया की कलीसिया के नाम पत्र में उस कलीसिया की तीन कौन सी विशेषताएं बताई गई हैं?
3. ''आमीन'' शब्द का क्या अर्थ है? यीशु पर लागू करने पर इसका क्या अर्थ होता है?
4. ''परमेश्वर की सृष्टि का मूल'' वाक्यांश का क्या अर्थ है?
5. आत्मिक रूप में ''ठण्डा'' या ''गर्म'' होने का क्या अर्थ है?
6. ''नीम गर्म'' होने का क्या अर्थ है? आत्मिक नीम गर्म होने के कुछ उदाहरण दें।
7. यीशु ने इस बात को प्राथमिकता क्यों दी कि लौदीकिया के मसीही नीम गर्म होने के बजाय ठण्डे होते?
8. यीशु के यह कहने का क्या अर्थ था कि वह लौदीकिया के लोगों को ''उगलने'' या ''थूकने'' पर था?
9. लौदीकिया के लोग अपने आप को कैसे देखते थे? क्या अपनी आत्मिक स्थिति के बारे में भ्रम में रहना सम्भव है?
10. उनकी वास्तविक आत्मिक स्थिति क्या थी?
11. वे किस अर्थ में ''निर्धन''? ''अन्धे''? ''नंगे'' थे?